[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 1610 **H**

Unique Paper Code : 12051202

Name of the Paper : Hindi kavita (Reetikaleen Kavya)

Name of the Course : **B.A. (Hon.) Hindi**

Semester : II (CBCS)

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. केशव की काव्य-कला का विवेचन कीजिए।

अथवा

नीति काव्य परंपरा में रहीम का स्थान निर्धारित कीजिए। (12)

P.T.O.

2. "यदि प्रबंध एक विस्तृत वनस्थली है तो मुक्तक एक चुना हुआ गुलदस्ता" इस कथन के आलोक में बिहारी के दोहों का मूल्यांकन कीजिए।

अथवा

"बिहारी ने अपने दोहों में गागर में सागर भरा है" इस कथन की सार्थकता सिद्ध कीजिए। (12)

3. घनानंद की कविता के भाव पक्ष का विश्लेषण कीजिए।

अथवा

घनानंद की प्रेम व्यंजना पर प्रकाश डालिए। (12)

4. भूषण की काव्यगत विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

अथवा

गिरधर कविराय के काव्य में व्यक्त आदर्शों की चर्चा कीजिए। (12)

5. सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

(क) रूपनिधान सुजान सखी जब तें इन नैननि नेकु निहारे।
दीठि थकी अनुराग-छकी मति लाज के साज-समाज बिसारे।
एक अचंभौ घनानंद हैं नित ही पल-पाट उघारे।
टारें टरैं नहीं तारे कहूँ सु लगे मनमोहन- मोह के तारे।।

अथवा

बेद राखे बिदित पुरान परसिद्ध राखे राम-नाम राख्यो अति रसना सुघर में।

हिंदुन की चोटी रोटी राखी है सिपाहिन की काँधे में जनेऊ राख्यो मात्रा राखी गर में।

मीड़ि राखे मुगल मरोड़ राखे पातसाह बैरी पीसि राखे बरदान राख्यो कर में।

राजन की हद्द राखी तेगबल सिवराज देव राखे देवल स्वधर्म राख्यो घर में।

(ख) साई बैर न कीजिए, गुरु, पंडित, कवि, यार
बेटा, बनिता, पँवरिया, यज्ञ करावन हार
यज्ञ करावन हार, राजमंत्री हो होई
विप्र, परोसी, वैद, आपको तपै रसोई
कह गिरिधर कविराय, युगन ते यह चलि आई
इन तेरह सों तरह दिए, बनि आवै साईं

अथवा

रहिमन अँसुआ नैन ढरि जिय दुःख प्रकट करेइ।
जाहि निकारो गेह ते कस न भेद कहि देइ ।।
रहिमन धागा प्रेम का, मत तोड़ो छिटकाय।
टूटे से फिर ना मिले, मिले गाँठ परि जाय ।। (8+7=15)

P.T.O.

6. दिए गए निर्देशों के आधार पर किन्हीं दो का रचना कौशल उद्घाटित कीजिए :

(क) चरण धरत चिंता करत, नींद न भावत शोर।
सुबरण को सोधत फिरत, कबि व्यभिचारी चोर।। (काव्य कौशल)

(ख) जटिल नीलमनि जगमगति सींक सुहाई नाँक।
मनो अली चंपक-कली बसि रसु लेतु निसाँक।।
मिली चंदन-बेंदी रही गोरै मुँह, न लखाइ।
ज्यौं-ज्यों मद-लाली चढ़े, त्यौं-त्यौं उघरति जाइ।
(रूप वर्णन)

(ग) काज परै कछु और है काज सरै कछु और।
रहिमन भँवरी के भए नदी सिरावत मौर।।
(सामाजिक परंपरा का वर्णन)

(घ) रावरे रूप की रीति अनूप नयो नयो लागत ज्यौ ज्यौं निहारियै।
त्यौं इन आँखिन बानि अनोखी अघानि कहूँ नहिं आन तिहारियै।।
एक ही जीवन हुतौ सु तौ बार्यो सुजान सकोच और सोच सहारियै।
रोकी रहै न दुई घनआनँद बावरी रीझ के हाथनि हारियै।।
(प्रेम के स्वरूप का वर्णन)
(6+6=12)